23R

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

संस्कृत विशारद (बी.ए.) – नियमित

परीक्षा : मे – २०२४

सत्र १ ले

विषय: पञ्चतन्त्र–काकोलूकीय। (23R412)

दिनांक : २३/०५/२०२४ **गुण :**४० **वेळ :** दु. २.०० ते ३.३०

सूचना : सर्व प्रश्न अनिवार्य

प्र.१. पञ्चतन्त्रविषये नियोजितकथाभ्यः कथामेकां स्वशब्दैः संस्कृतेन लिखत। **(१०)**

प्र.२.अ पञ्चानां सन्धिं सन्धिविग्रहं वा कुरुत। **(०५)**

१. ह्येतच्छून्यम् २. खलु+इदम् ३. छगलादिव ४. त्वम् +अत्र
५. आहुर्गृहिणी ६. काकः+अपि ७. इत्यवधार्य

आ त्रयाणां समासविग्रहं कृत्वा समासनाम लिखत। **(०३)**

१. महाराजः २. यथाविधि ३. पुत्रबुद्धिम् ४. निर्दयम् ५. शोकाविष्टः

इ सप्तानां रूपपरिचयं लिखत। **(०७)**

१.रमावहे २. निशम्य ३. गन्तुम् ४. वायसान् ५. राजानः
६. प्रविशति ७. मम ८. प्रत्यवदत् ९. तस्मै १०. श्रीः

प्र.३. प्रतिप्रश्नं द्वयोः उत्तराणि लिखत। **(१०)**

अ लकारपरिवर्तनं कुरुत।

१. जलपानेन ते स्वस्थतां व्रजन्ति।(लङ्)
२. तवाभिप्रायं श्रोतुमिच्छामि।(लङ्)
३. सोऽचिन्तयत्।(लट्)

आ वाच्यपरिवर्तनं कुरुत।

१. मुनिना पर्वतः पृष्टः।
२. देवेन एषः प्रश्नः कृतः।
३. वायसः विघ्नं करोति।

इ त्वं स्थाने भवान् इति कर्तृपदं योजयत।

१. त्वं न स्मरसि।
२. त्वं सकलं श्रुत्वा समादिशसि।
३. त्वं स्वस्थाने यास्यसि।

ई वचनपरिवर्तनंकुरुत।

१. सः तं वायसं व्यापाद्य गच्छति।(द्विवचने)
२. त्वं ब्राह्मणस्य गोयुगमपहरसि।(बहुवचने)
३. आवां रात्रौ न पश्यावः।(एकवचने)

उ स्म निष्कासयत।

१. षण्मासे षण्मासे पिच्छमेकैकं परित्यजन्ति स्म।
२. वयं रात्रौ न पश्यामः स्म।
३. सः तत्र कालं नयति स्म।

प्र.४. वाक्यमेकं ससन्दर्भं स्पष्टीकुरुत। **(०५)**

१. ये हितं वाक्यमुत्सृज्यविपरीतोपसेविनः।
२. परुषाण्यपिजल्पन्तोवध्या दूता न भूभुजा।